तीसरी कसम के शिल्पकार: शैलेंद्र

एक भावुक कवि की सेल्युलाइड पर लिखी कविता

प्रहलाद अग्रवाल द्वारा लिखित अध्याय पर आधारित

NotebookLM

सम्मान (The Honor)

- फिल्म को 'राष्ट्रपति स्वर्ण पदक' (President's Gold Medal) मिला।
- बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार।
- मास्को फिल्म फेस्टिवल में भी पुरस्कृत।

हकीकत (The Reality)

- इसे खरीदने वाला कोई वितरक (Distributor) नहीं था।
- रिलीज के समय कोई प्रचार नहीं हुआ।
- फिल्म कब आई और कब चली गई, मालूम ही नहीं पड़ा।

"यह हिंदी फिल्मों के इतिहास में एक 'मील का पत्थर' (Milestone) है।"

NotebookLM

कवि-हृदय: जो व्यापार के लिए नहीं बना था

- शैलेंद्र फिल्म निर्माता बनने के लिए सर्वथा अयोग्य थे। वे एक आदर्शवादी भावुक कवि थे।
- उन्हें अपार संपत्ति और यश की कामना नहीं थी, बल्कि 'आत्म-संतुष्टि' (Self-satisfaction) की अभिलाषा थी।
- फिल्म इंडस्ट्री के तौर-तरीकों में उलझकर भी उन्होंने अपनी इंसानियत (Aadmiyat) नहीं खोई थी।

"वे शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए थे।"

NotebookLM

साहित्यिक निष्ठा: ‘मारे गए गुलफाम’

यह फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की अमर कृति ‘तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम’ पर आधारित थी।

यह उन चंद फिल्मों में से है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया। कहानी का रेशा-रेशा, छोटी-से-छोटी बारीकियां फिल्म में पूरी तरह उतर आई।

पटकथा स्वयं फणीश्वरनाथ रेणु ने तैयार की थी।

NotebookLM

राज कपूर का रूपांतरण: शोमैन से हीरामन तक

एक रुपये का मेहनताना

Noto Serif Devanagari

जब शैलेंद्र ने राज कपूर से फीस की बात की, तो राज कपूर ने मजाक में कहा, 'निकालो एक रुपया, मेरा पारिश्रमिक! पूरा एडवांस।'

यह राज कपूर के जीवन की सर्वश्रेष्ठ भूमिका थी

- एशिया का सबसे बड़ा 'शोमैन' एक देहाती गाड़ीवान 'हीरामन' की आत्मा में उतर गया।
- उन्होंने अभिनय नहीं किया, वे हीरामन में ढल गए। आँखों से बात करने वाला कलाकार।

NotebookLM

वहीदा रहमान: आँखों की भाषा

- किरदार: छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी ‘हीराबाई’।
- अभिनय: वहीदा ने अपनी प्रसिद्ध ऊँचाइयों को पीछे छोड़ दिया।
- जब हीरामन पूछता है ‘मन समझती हैं न आप?’, तब हीराबाई जुबान से नहीं, आँखों से बोलती है। दुनिया भर के शब्द उस भाषा को अभिव्यक्ति नहीं दे सकते।

NotebookLM

संगीत और गीत: लोक-तत्व की गूंज

1. संगीतकार: शंकर-जयकिशन का संगीत।

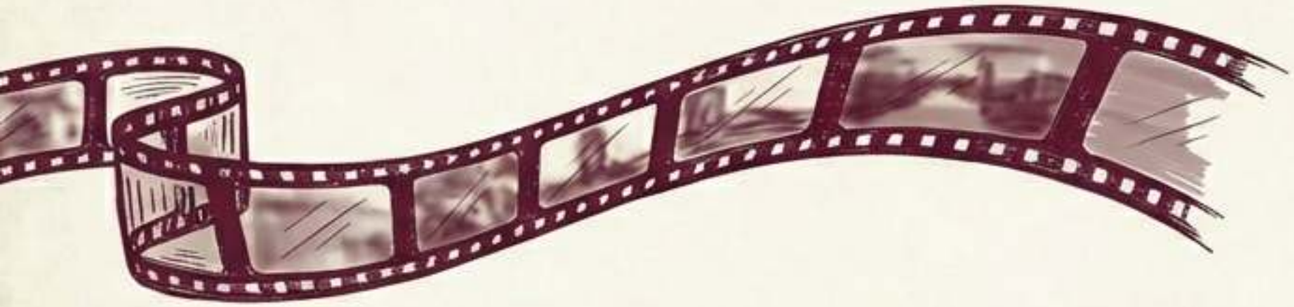

2. गीत: शैलेंद्र के गीत भाव-प्रवण थे, दुरूह नहीं। उनमें 'जूझने का संकेत' था।

3. अमर गीत: मुकेश की आवाज में 'सजनवा बैरी हो गए हमार...' अद्वितीय बन गया।

4. ईमानदारी: 'श्री 420' के समय भी शैलेंद्र ने 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियां' पंक्ति बदलने से मना कर दिया था, क्योंकि वे दर्शकों की रुचि की आड़ में 'उथलापन' (Cheapness) नहीं थोपना चाहते थे।

NotebookLM

यथार्थवाद बनाम ग्लैमर

- दृश्य: फिल्म में 'फेक सेट्स' (Fake sets) नहीं थे। धूल, गाड़ीवान, और देहाती जीवन की वास्तविकता थी।
- संवेदना: हिंदी फिल्मों की कमजोरी है कि वे दुख को 'ग्लोरीफाई' (Glorify) करती हैं। 'तीसरी कसम' ने दुख को जीवन-सापेक्ष और सहज स्थिति में प्रस्तुत किया।
- वातावरण: नौटंकी की बाई, गाड़ीवानों की मस्ती, और अभावों में भी जीती हुई जिंदगी।

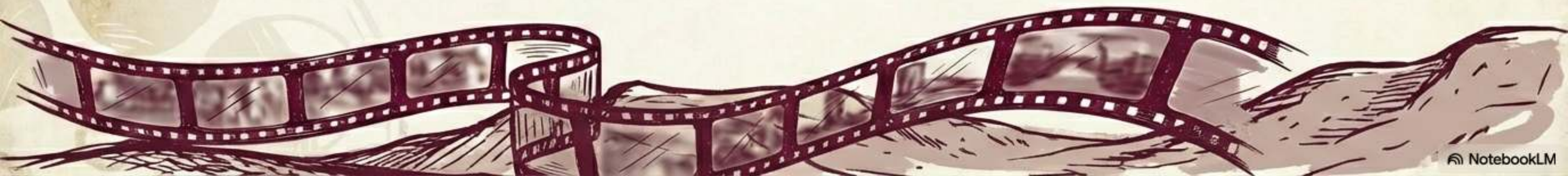

NotebookLM

बाजार का गणित: दो से चार बनाना

संघर्ष: फिल्म में राज कपूर और वहीदा रहमान जैसे सितारे थे, फिर भी इसे खरीदने वाला कोई नहीं था।
कारण: फिल्म की संवेदना (Sensitivity) उन लोगों की समझ से परे थी जो सिर्फ 'दो से चार बनाने का गणित' जानते थे।

फिल्म में रची-बसी करुणा तराजू पर तोली जा सकने वाली चीज नहीं थी।

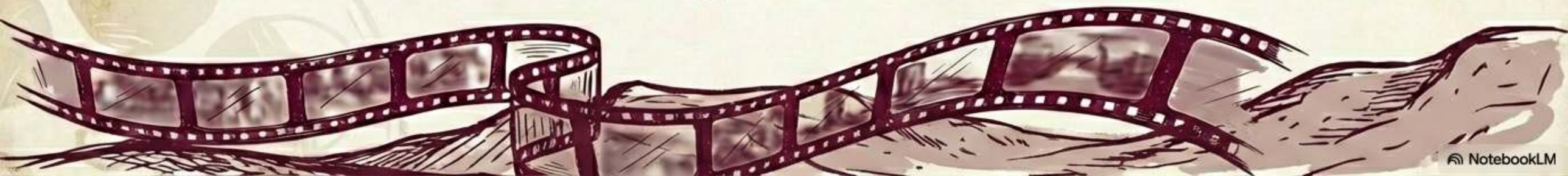

NotebookLM

एक खामोश रिलीज और अंत

रिलीज: जब फिल्म रिलीज हुई, तो कोई प्रचार नहीं हुआ। सन्नाटे में फिल्म आई और चली गई।

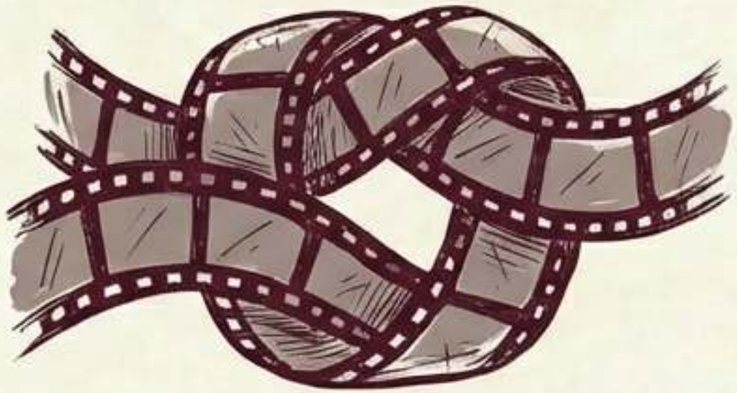

सदमा: शैलेंद्र यह झटका बर्दाश्त नहीं कर सके। 'तीसरी कसम' उनकी पहली और अंतिम फिल्म साबित हुई।

विडंबना: राज कपूर ने उन्हें चेताया था कि फिल्म निर्माण में खतरे हैं। अंततः, एक 'कवि' फिल्म इंडस्ट्री की निष्ठुरता का शिकार हो गया।

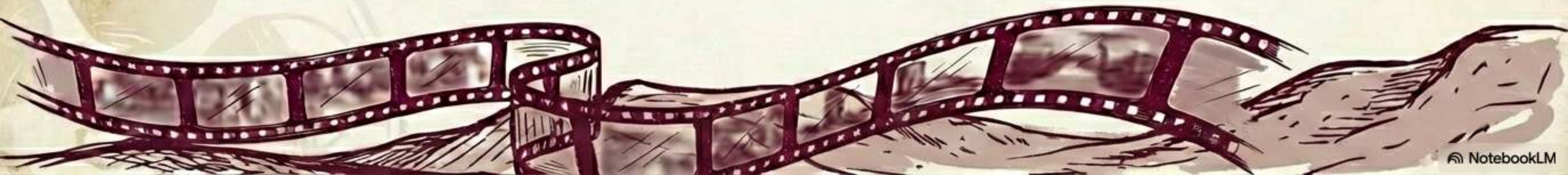

NotebookLM

शैलेंद्र की विरासत: व्यथा की शक्ति

शैलेंद्र के गीतों और इस फिल्म का मूल मंत्र था—
‘व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती,
उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।’

- उन्होंने कभी ‘झूठे अभिजात्य’ (Fake aristocracy) को नहीं अपनाया।
- फिल्म ने साबित किया कि सच्चा सिनेमा दर्शकों की रुचियों का परिष्कार (Refinement) करता है, न कि उनके सामने झुकता है।

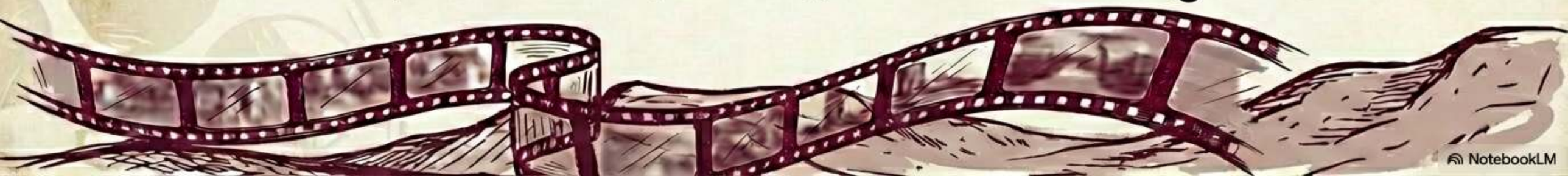

NotebookLM

सेल्युलाइड पर लिखी कविता

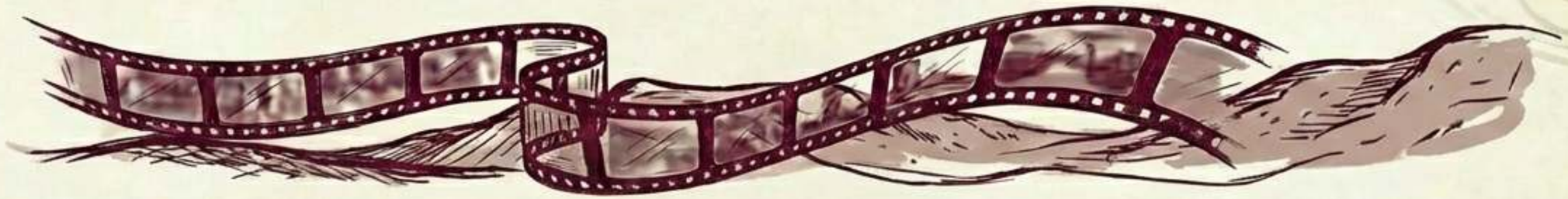

‘तीसरी कसम’ महज एक फिल्म नहीं थी। यह एक संवेदना थी जिसे केवल एक सच्चा ‘कवि-हृदय’ ही बना सकता था।

आज भी इसकी गणना हिंदी की अमर फिल्मों में होती है। शैलेंद्र ने अपनी जिंदगी की शांत नदी और समुद्र की गहराई को इस फिल्म में अमर कर दिया।

तीसरी कसम के शिल्पकार: शैलेंद्र

NotebookLM